**परियोजनाओं की लागतों में वृद्धि**

2025. **डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :**
**श्री राम जेठमलानी :**

क्या **योजना और कार्यक्रम कार्यान्वयन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 'आब्जर्वर" दैनिक में "कास्ट ग्राफ 303 प्रोजेक्ट्स एस्कलेट्स 47 परसेंट" शीर्षक के प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है;

(ख) यदि हां, तो क्या यह सच है कि सरकार ने 100 करोड़ रुपए अथवा इससे अधिक लागत वाली परियोजनाओं के निर्माण कार्य की निरंतर निगरानी करने के लिए प्रभावी व्यवस्था की है ;

(ग) यदि हां, तो क्या यह सच है कि इन परियोजनाओं के निर्माण के लिए पिछली बार स्वीकृत की गई 72,430 करोड़ रुपए की राशि बढ़कर 106,994 करोड़ रुपए हो गई है ;

(घ) क्या सरकार इन परियोजनाओं की निरंतर निगरानी के बावजूद इनके पूरा होने में हो रहे अत्यधिक विलंब के लिए दिए गए कारणों से संतुष्ट है ; और

(ङ) यदि हां, तो सरकार की इस पर क्या प्रतिक्रिया है ?

**योजना और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री गिरिधर गोमांगो)** : (क) जी, हां।

(ख) भारत सरकार के कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग ने 100 करोड़ रुपए एवं उससे अधिक लागत वाली परियोजनाओं की प्रगति का मासिक प्रबोधन करने के लिए एक कम्प्यूटरीकृत प्रणाली की स्थापना की है।

(ग) दिसम्बर, 1992 की स्थिति के अनुसार, कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग की प्रबोधन प्रणाली पर सभी 303 परियोजनाओं की स्वीकृत लागत 72,430 करोड़ रु० से 106,994 करोड़ रु० अर्थात 47.7% तक बढ़ गई है।

(घ) और (ङ) परियोजना उद्यमों द्वारा दिए गए कारणों का संबंधित मंत्रालयों तथा विभागों द्वारा गहन परीक्षण किया जाता है। कभी-कभी कारण संतोषजनक होते हैं जैसे संसाधनों की कमी, भूमि अधिग्रहण की समस्या इत्यादि। दिए गए कारणों से संतुष्ट न होने पर, कभी-कभी सरकार भी परियोजना उद्यमों को व्यर्थ हुए समय की पूर्ति के लिए पूर्ति योजना बनाने का निर्देश देती है। अधिक विलंब होने से बचने हेतु एक उद्यम के नियंत्रण से परे समस्याओं को सुलझाने के लिए सरकार में विभिन्न स्तरों पर सुविधाजनक कार्रवाई भी प्रारंभ की गई है।

**गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले व्यक्तियों की संख्या में कमी लाने का लक्ष्य**

2026. **डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :**
**श्री वीरेन जे० शाह :**
**श्रीमती सुषमा स्वराज :**
**श्री राम जेठमलानी :**

क्या **योजना और कार्यक्रम कार्यान्वयन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सातवीं पंचवर्षीय योजना के अंत में देश में कुल जनसंख्या के 28 से 30 प्रतिशत लोगों के गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे होने का अनुमान लगाया गया था ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक इसे कम करके 18 से 28 प्रतिशत तक लाने का प्रस्ताव है ; और

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

**योजना और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री गिरिधर गोमांगो)** : (क) गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोगों की संख्या का आकलन योजना आयोग द्वारा उन वर्षों के लिए किया जाता है जिसके लिए राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) द्वारा घरेलू उपभोक्ता व्यय पर किये गये पंचवार्षिक सर्वेक्षण